

शब्दसृष्टिं पश्यत ☺

अमर्त्यः

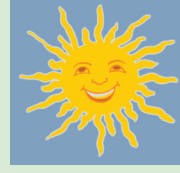
निर्जरः
अमरः
देवः
प्रभुः



त्रिदशः
विबुधः
सुरः
भगवान्

आदित्यः

मित्रः
दिनकरः
दिवाकरः
सूर्यः



रविः
भास्करः
चण्डांशुः
भास्वान्

भगवान्
भास्वान्
विद्यावान्
गुणवान्
ज्ञानवान्
कलावान्

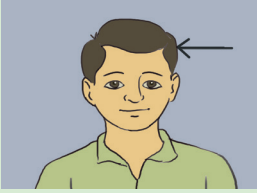
श्रीमान्
शक्तिमान्
बुद्धिमान्
आयुष्मान्
हनुमान्
कीर्तिमान्

वत्/मत् प्रत्ययः स्वामित्वं दर्शयति । एते
वत्/मत् प्रत्ययान्ताः ।

‘वत्’- प्रत्ययान्ताः

‘मत्’- प्रत्ययान्ताः

एतान् व्यञ्जनान्तान् अवगच्छत ।



शिरः
(शिरस्)



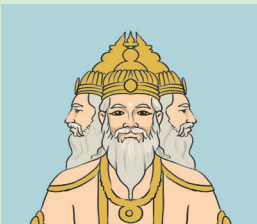
अध्वा
(अध्वन्)



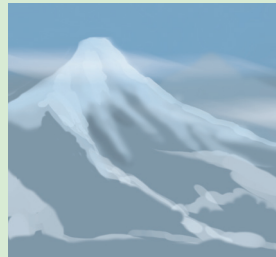
व्योम
(व्योमन्)



पक्षी
(पक्षिन्)



ब्रह्मा
(ब्रह्मन्)



हिमवान्
(हिमवत्)



| अन्तम् | पुंलिङ्गम् | स्त्रीलिङ्गम् | नपुंसकलिङ्गम् |
|----------------------|---------------|--------------------------------------------------------------------------------|----------------|
| सकारान्ताः | चन्द्रमस् | अप्सरस् | पयस् |
| तकारान्ताः | मरुत् | तडित् | जगत् |
| वत/मत्-प्रत्ययान्ताः | भगवत्/श्रीमत् | ई प्रत्ययं योजयित्वा नदी-शब्दवत् रूपाणि । यथा भगवती, श्रीमती, शशिनी, योगिनी | जगत् - शब्दवत् |
| इन्नन्ताः | शशिन् | | भाविन् |
| अन्नन्ताः | राजन्/आत्मन् | - | नामन्/वर्त्मन् |
| चकारान्ताः | पयोमुच् | वाच् | - |
| जकारान्ताः | वणिज् | स्रज् | - |
| शकारान्ताः | - | दिश् | - |

भगवत् - वत्प्रत्ययान्तं विशेषणं पुंलिङ्गम् ।

श्रीमत् - मत्प्रत्ययान्तं विशेषणं पुंलिङ्गम् ।

| एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|----------|-------------|------------|-----------|------------|---------------|--------------|
| भगवान् | भगवन्तौ | भगवन्तः | प्रथमा | श्रीमान् | श्रीमन्तौ | श्रीमन्तः |
| भगवन्तम् | भगवन्तौ | भगवतः | द्वितीया | श्रीमन्तम् | श्रीमन्तौ | श्रीमतः |
| भगवता | भगवद्भ्याम् | भगवद्भिः | तृतीया | श्रीमता | श्रीमद्भ्याम् | श्रीमद्भिः |
| भगवते | भगवद्भ्याम् | भगवद्भ्यः | चतुर्थी | श्रीमते | श्रीमद्भ्याम् | श्रीमद्भ्यः |
| भगवतः | भगवद्भ्याम् | भगवद्भ्यः | पञ्चमी | श्रीमतः | श्रीमद्भ्याम् | श्रीमद्भ्यः |
| भगवतः | भगवतोः | भगवताम् | षष्ठी | श्रीमतः | श्रीमतोः | श्रीमताम् |
| भगवति | भगवतोः | भगवत्सु | सप्तमी | श्रीमति | श्रीमतोः | श्रीमत्सु |
| हे भगवन् | हे भगवन्तौ | हे भगवन्तः | सम्बोधनम् | हे श्रीमन् | हे श्रीमन्तौ | हे श्रीमन्तः |

भगवत् इव अन्ये शब्दाः- क्षमावत्, हिमवत्, बलवत्, दयावत्, हनुमत्, बुद्धिमत्, शक्तिमत् इत्यादयः ।

गतवत्, पठितवत्, दृष्टवत्, नीतवत् इत्यादीनि कर्तरि भू.धा. विशेषणानि 'भगवत्' शब्दवत् प्रपद्यन्ते ।

- शशिन् शश-इन् (इन् प्रत्ययः स्वामित्वं दर्शयति) 'शशः' नाम शशकः । शशः यस्य (अङ्के) अस्ति सः शशी ।

शशिन् - इन्नन्तं विशेषणं पुंलिङ्गम् ।

भाविन् - इन्नन्तं विशेषणं नपुंसकलिङ्गम् ।

| एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|----------|-----------|----------|-----------|--------------------|------------|-----------|
| शशी | शशिनौ | शशिनः | प्रथमा | भावि | भाविनी | भावीनि |
| शशिनम् | शशिनौ | शशिनः | द्वितीया | भावि | भाविनी | भावीनि |
| शशिना | शशिभ्याम् | शशिभिः | तृतीया | भाविना | भाविभ्याम् | भाविभिः |
| शशिने | शशिभ्याम् | शशिभ्यः | चतुर्थी | भाविने | भाविभ्याम् | भाविभ्यः |
| शशिनः | शशिभ्याम् | शशिभ्यः | पञ्चमी | भाविनः | भाविभ्याम् | भाविभ्यः |
| शशिनः | शशिनोः | शशिनाम् | षष्ठी | भाविनः | भाविनोः | भाविनाम् |
| शशिनि | शशिनोः | शशिषु | सप्तमी | भाविनि | भाविनोः | भाविषु |
| हे शशिन् | हे शशिनौ | हे शशिनः | सम्बोधनम् | हे भाविन्/ भावि | हे भाविनी | हे भावीनि |

शशिन् इव अन्ये शब्दाः- स्वामिन्, प्राणिन्, विद्यार्थिन्, शाखिन्, योगिन्, संन्यासिन्, वाजिन्, श्रेष्ठिन् इत्यादयः ।

| चन्द्रः | शशिन् |
|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>चन्द्रः गगने वर्तते । रात्रौ वयं चन्द्रं पश्यामः ।</p> <p>चन्द्रेण एव निशायाः शोभा वर्धते ।</p> <p>चन्द्राय सर्वे स्पृहयन्ति ।</p> <p>चन्द्रात् मानवाः प्रकाशं लभन्ते ।</p> <p>सुधांशुः शशाङ्कः, चन्द्रमाः इत्येतानि</p> <p>चन्द्रस्य अन्यानि नामानि ।</p> <p>चन्द्रे कलङ्काः अपि सन्ति ।</p> <p>हे चन्द्र, मह्यं मनःसामर्थ्यं यच्छ ।</p> | <p>शशी गगने वर्तते । रात्रौ वयं _____ पश्यामः ।</p> <p>_____ एव निशायाः शोभा वर्धते ।</p> <p>_____ सर्वे स्पृहयन्ति ।</p> <p>_____ मानवाः प्रकाशं लभन्ते ।</p> <p>सुधांशुः शशाङ्कः, चन्द्रमाः इत्येतानि</p> <p>_____ अन्यानि नामानि ।</p> <p>_____ कलङ्काः अपि सन्ति ।</p> <p>हे _____, मह्यं मनःसामर्थ्यं यच्छ ।</p> |



आत्मन् – अत्रन्तं पुंलिङ्गं नाम ।

राजन् – अत्रन्तं पुंलिङ्गं नाम ।

| एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-----------|------------|------------|-----------|---------------|-----------|-----------|
| आत्मा | आत्मानौ | आत्मानः | प्रथमा | राजा | राजानौ | राजानः |
| आत्मानम् | आत्मानौ | आत्मनः | द्वितीया | राजानम् | राजानौ | राज्ञः |
| आत्मना | आत्मभ्याम् | आत्मभिः | तृतीया | राज्ञा | राजभ्याम् | राजभिः |
| आत्मने | आत्मभ्याम् | आत्मभ्यः | चतुर्थी | राज्ञे | राजभ्याम् | राजभ्यः |
| आत्मनः | आत्मभ्याम् | आत्मभ्यः | पञ्चमी | राज्ञः | राजभ्याम् | राजभ्यः |
| आत्मनः | आत्मनोः | आत्मनाम् | षष्ठी | राज्ञः | राज्ञोः | राज्ञाम् |
| आत्मनि | आत्मनोः | आत्मसु | सप्तमी | राज्ञि, राजनि | राज्ञोः | राजसु |
| हे आत्मन् | हे आत्मानौ | हे आत्मानः | सम्बोधनम् | हे राजन् | हे राजानौ | हे राजानः |

जन्मन् – अत्रन्तं नपुंसकलिङ्गं नाम ।

नामन् – अत्रन्तं नपुंसकलिङ्गं नाम ।

| एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|---------|------------|------------|-----------|------------------|---------------------|-----------|
| जन्म | जन्मनी | जन्मानि | प्रथमा | नाम | नामनी-नाम्नी | नामानि |
| जन्म | जन्मनी | जन्मानि | द्वितीया | नाम | नामनी-नाम्नी | नामानि |
| जन्मना | जन्मभ्याम् | जन्मभिः | तृतीया | नाम्ना | नामभ्याम् | नामभिः |
| जन्मने | जन्मभ्याम् | जन्मभ्यः | चतुर्थी | नाम्ने | नामभ्याम् | नामभ्यः |
| जन्मनः | जन्मभ्याम् | जन्मभ्यः | पञ्चमी | नाम्नः | नामभ्याम् | नामभ्यः |
| जन्मनः | जन्मनोः | जन्मनाम् | षष्ठी | नाम्नः | नाम्नोः | नाम्नाम् |
| जन्मनि | जन्मनोः | जन्मसु | सप्तमी | नाम्नि, नामनि | नाम्नोः | नामसु |
| हे जन्म | हे जन्मनी | हे जन्मानि | सम्बोधनम् | हे नामन्/ नाम | हे नामनी/ नाम्नी | हे नामानि |

‘आत्मन्’ – अनुसारम् – महात्मन्, अध्वन्, यज्वन्, **ब्रह्मन्**, अश्मन् इत्यादीनि ।

‘राजन्’ – अनुसारम् – ग्रावन्, मूर्धन्, महिमन्, गरिमन्, लघिमन्, सीमन् (स्त्री.), **प्रेमन्** इत्यादीनि ।

‘जन्मन्’ – अनुसारम् – कर्मन्, वर्त्मन्, भस्मन्, **ब्रह्मन्**, सद्यन् इत्यादीनि ।

‘नामन्’ – अनुसारम् – हेमन्, व्योमन्, **प्रेमन्**, सामन्, दामन्, धामन्, लोमन् इत्यादीनि ।

* **ब्रह्मन्** तथा **प्रेमन्** – पुंलिङ्गे नपुंसकलिङ्गे च वर्तेते ।

वाच् - चकारान्तं स्त्रीलिङ्गं नाम ।

दिश् - शकारान्तं स्त्रीलिङ्गं नाम ।

| एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|--------------|------------|----------|-----------|--------------|------------|----------|
| वाक्-वाग् | वाचौ | वाचः | प्रथमा | दिक्-दिग् | दिशौ | दिशः |
| वाचम् | वाचौ | वाचः | द्वितीया | दिशम् | दिशौ | दिशः |
| वाचा | वाग्भ्याम् | वाग्भिः | तृतीया | दिशा | दिग्भ्याम् | दिग्भिः |
| वाचे | वाग्भ्याम् | वाग्भ्यः | चतुर्थी | दिशे | दिग्भ्याम् | दिग्भ्यः |
| वाचः | वाग्भ्याम् | वाग्भ्यः | पञ्चमी | दिशः | दिग्भ्याम् | दिग्भ्यः |
| वाचः | वाचोः | वाचाम् | षष्ठी | दिशः | दिशोः | दिशाम् |
| वाचि | वाचोः | वाक्षु | सप्तमी | दिशि | दिशोः | दिक्षु |
| हे वाक्/वाग् | हे वाचौ | हे वाचः | सम्बोधनम् | हे दिक्/दिग् | हे दिशौ | हे दिशः |

‘वाच्’ शब्दवत्- त्वच् (स्त्री.), पयोमुच् (पुं.) इत्यादयः।

‘दिश्’ शब्दवत्- दृश् इत्यादयः।

वणिज् - जकारान्तं पुलिङ्गं नाम ।

स्रज् - जकारान्तं स्त्रीलिङ्गं नाम ।



| एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | विभक्तिः | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-------------|-------------|-----------|-----------|-------------|-------------|-----------|
| वणिक्/ग् | वणिजौ | वणिजः | प्रथमा | स्रक्/ग् | स्रजौ | स्रजः |
| वणिजम् | वणिजौ | वणिजः | द्वितीया | स्रजम् | स्रजौ | स्रजः |
| वणिजा | वणिग्भ्याम् | वणिग्भिः | तृतीया | स्रजा | स्रग्भ्याम् | स्रग्भिः |
| वणिजे | वणिग्भ्याम् | वणिग्भ्यः | चतुर्थी | स्रजे | स्रग्भ्याम् | स्रग्भ्यः |
| वणिजः | वणिग्भ्याम् | वणिग्भ्यः | पञ्चमी | स्रजः | स्रग्भ्याम् | स्रग्भ्यः |
| वणिजः | वणिजोः | वणिजाम् | षष्ठी | स्रजः | स्रजोः | स्रजाम् |
| वणिजि | वणिजोः | वणिक्षु | सप्तमी | स्रजि | स्रजोः | स्रक्षु |
| हे वणिक्/ग् | हे वणिजौ | हे वणिजः | सम्बोधनम् | हे स्रक्/ग् | हे स्रजौ | हे स्रजः |

‘वणिज्’ शब्दवत् - ऋत्विज्, भिषज् इत्यादयः ।

जिज्ञासापत्रम्



१) स्तम्भपूरणं कुरुत ।

| * | | स्वरान्तम् | | व्यञ्जनान्तम् | |
|---------|-------------------------------------------------------------------------------------|--------------|-------------|--------------------------------------------|-------------|
| चित्रम् | | प्रातिपदिकम् | प्रथमा ए.व. | प्रातिपदिकम् | प्रथमा ए.व. |
| १. |  | नृप | | राजन्, भूभृत्, क्ष्माभृत्, महीक्षित् | |
| २. |  | जलद | | पयोमुच् | |

२) चतुर्थपदं लिखत

अ) वाणी - वाण्या :: वाच् - _____ ।
इ) प्राज्ञ - प्राज्ञान् :: धीमत् - _____ ।

आ) जल - जलात् :: पयस् - _____ ।
ई) नदी - नदीनाम् :: सरित् - _____ ।

३) वाक्यार्थमेलनं कुरुत ।

अ) भूभृत् पृथिवीं रक्षति ।

अ) गीर्वाणवाणी देवभाषा ।

आ) व्योम्नि विहायसः विहरन्ति ।

आ) विश्वं भगवता सृष्टम् ।

इ) संस्कृतवाग् विबुधभारती ।

इ) आकाशे खगाः उड्डयन्ते ।

ई) श्रीकृष्णस्य मस्तके मुकुटं भाति ।

ई) गोविन्दस्य मूर्ध्नि किरीटं विराजते ।

उ) जगत् ईश्वरेण निर्मितम् ।

उ) राजा मेदिनीं प्रतिपालयति ।

४) तालिकां पूर्यत ।

| एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् | विभक्तिः |
|-------------|---------------------|----------|-----------|
| १. हेम | _____/____ | _____ | प्रथमा |
| २. _____ | विद्यावन्तौ | _____ | द्वितीया |
| ३. _____ | त्वग्भ्याम् | _____ | तृतीया |
| ४. _____ | ब्रह्मभ्याम् (पुं.) | _____ | चतुर्थी |
| ५. भिषजः | _____ | _____ | पञ्चमी |
| ६. ग्राव्यः | _____ | _____ | षष्ठी |
| ७. _____ | _____ | योगिषु | सप्तमी |
| ८. _____ | _____ | हनुमन्तः | सम्बोधनम् |

५) योग्यं रूपं योजयत ।

अ) सीता _____ रत्नहारं यच्छति । (हनुमत्)

आ) तारकाः _____ शोभन्ते । (व्योमन्)

इ) प्रजापालनं _____ कर्तव्यम् । (राजन्)

ई) मम मित्रस्य _____ नसीरः । (नामन्)

उ) हे _____, किं करवाणि ? (स्वामिन्)

पठत-बोधत ।

उपपदविभक्तयः

१. न हि सुखं दुःखैः विना लभ्यते ।
२. विना पुरुषकारेण न च दैवं सुसिध्यति ।
३. न काचस्य कृते जातु युक्ता मुक्तामणेः क्षतिः ।
४. नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
५. तस्मै श्रीगुरवे नमः ।

पठत-बोधत-कण्ठस्थीकुरुत ।

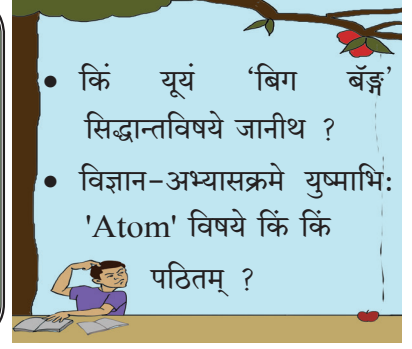
कारकाणि

१कर्ता २कर्म च ३करणं ४सम्प्रदानं तथैव च ।
५अपादान-६अधिकरणमित्याहुः कारकाणि षट् ॥

शब्दानुक्रमणिका

१रामो २हरिः ३करी ४भूभृद् ५भानुः ६कर्ता च ७चन्द्रमाः ।
८तस्थिवान् ९भगवान् १०आत्मा दशैते पुंसि नायकाः ॥
१रमा २रुचिर् ३नदी ४धेनुर् ५वाग् ६धीः ७सरिद्-अनन्तरम् ।
८क्षुत् ९प्रावृट् च १०शरच्चैव दशैते स्त्रीषु नायकाः ॥
१ज्ञानं २दधि ३पयो ४वर्म ५धनुर् ६वारि ७जगत् तथा ।
८मधु ९नाम १०मनोहारि दशैते तु नपुंसके ॥

विश्वस्य उत्पत्तिविषये नैके सिद्धान्ताः प्रतिपादिताः । नैके प्राचीनाः सिद्धान्ताः कालवशतां गताः नैके नूतनाः च वैज्ञानिकैः स्वीकृताः । 'Atom' इति शब्दः सर्वेषां सुपरिचितः एव । आधुनिकविज्ञानशास्त्रे 'Atom' इति मूलकारणं द्रव्यस्य । स एव 'Element' इति मन्यते । प्राचीनशास्त्रे तु 'परमाणुः' निर्मितेः मूलकारणम् इति कथितम् । परमाणोः वैशिष्ट्यानि महर्षिणा कणादमहोदयेन वैशेषिकदर्शने कथितानि । अस्मिन् विषये अधिकं संशोधनं शक्यम् ।



(अर्णवः जपाकुसुमं गृहीत्वा प्रविशति । तस्य पिता विज्ञानस्य प्राध्यापकः । सः पुस्तकपठने मग्नः । तस्य पाश्र्वे उत्पीठिकायां सूक्ष्मेक्षिका वर्तते ।)

अर्णवः - पितः, अस्माकम् उद्यानाद् जपाकुसुमम् आनीतं मया । कियन्तः सूक्ष्माः तस्य परागकणाः !

पिता - सूक्ष्मेक्षिकया पश्य, तेषां कणानां रचनाम् अपि द्रष्टुं शक्नोषि ! (अर्णवः तथा करोति ।)

पिता - किं द्रष्टुं त्वया ?

अर्णवः - पितः, अद्भुतम् एतत् । अत्र परागकणस्य सूक्ष्माणि अङ्गानि दृश्यन्ते ।

पिता - अर्णव, एतानि पुष्पस्य अङ्गानि त्वं सूक्ष्मेक्षिकया द्रष्टुं शक्नोषि । परन्तु एतद् विश्वं परमाणुभ्यः निर्मितम् । ते परमाणवः तु सूक्ष्मेक्षिकया अपि न दृश्यन्ते ।

अर्णवः - परमाणुः नाम किम् ?

पिता - अस्तु । कथयामि । मुष्टिमात्रान् तण्डुलान् महानसतः आनय ।

अर्णवः - (तथेति उक्त्वा पाकगृहात् तण्डुलान् आनयति ।) स्वीकरोतु, तात ।

पिता - अधुना इमं तण्डुलं विभज ।

अर्णवः - तात, कियान् लघुः अस्ति एषः । पश्यतु, एतस्य भागद्वयं यथाकथमपि कृतं मया ।

पिता - इतोऽपि लघुतरः भागः कर्तुं शक्यते वा ?

अर्णवः - यदि क्रियते तर्हि चूर्णं भवेत् तस्य ।

पिता - सम्यग् उक्तं त्वया । यत्र एतद् विभाजनं समाप्यते, यस्मात् सूक्ष्मतरः भागः प्राप्तुं न शक्यते सः एव परमः अणुः ।

अर्णवः - द्रव्यस्य अन्तिमः घटकः मूलं तत्त्वं च परमाणुः, सत्यं खलु ?

पिता - सत्यम्, अयं खलु कणादमहर्षेः सिद्धान्तः । अपि जानासि ? परमाणुः द्रव्यस्य मूलकारणम् इति तेन महर्षिणा प्रतिपादितम् । तदपि प्रायः ख्रिस्तपूर्वं पञ्चमे षष्ठे वा शतके ।

अर्णवः - तात, महर्षिणा कणादेन किं किम् उक्तं परमाणुविषये ? वयं तु केवलं तस्य महाभागस्य नामधेयम् एव जानीमः ।

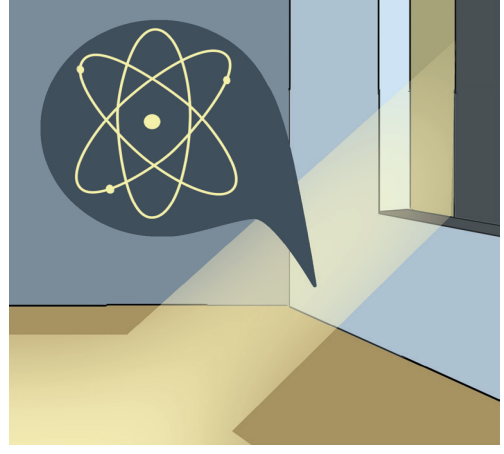
पिता - कणादमुनिना प्रतिपादितम् - परमाणुः अतीन्द्रियः, सूक्ष्मः, निरवयवः, नित्यः, स्वयं व्यावर्तकः च । 'वैशेषिकसूत्राणि' इति स्वग्रन्थे तेन परमाणोः व्याख्या कृता ।

अर्णवः - का सा व्याख्या ?

पिता - जालसूर्यमरीचिस्थं यत् सूक्ष्मं दृश्यते रजः ।
तस्य षष्ठतमो भागः परमाणुः स उच्यते ॥

अर्णवः - अहम् एतद्विषये विस्तरेण पठितुम् इच्छामि ।

पिता - उत्तमम् ! श्वः मम महाविद्यालयम् आगच्छ ।
तत्र कणादविषयकाणि नैकानि पुस्तकानि सन्ति
। तव जिज्ञासा निश्चयेन शाम्येत् ।



भाषाभ्यासः



१. पूर्णवाक्येन उत्तरं लिखत ।

अ) अर्णवः पाकगृहात् किम् आनयति ?

आ) कः परमाणुः ?

इ) परमाणुसिद्धान्तः केन महर्षिणा कथितः ?

ई) महर्षिणा कणादेन परमाणुविषये किं प्रतिपादितम् ?

उ) महर्षेः कणादस्य मतानुसारं परमाणोः व्याख्या का ?

२. समानार्थकशब्दान् लिखत ।

कुसुमम्, विश्वम्, पिता, नामधेयम्, सूर्यः ।

३. माध्यमभाषया उत्तरं लिखत ।

अ) महर्षिः कणादः परमाणुविषये किं प्रतिपादितवान् ?

आ) 'तण्डुलान् आनय' इति पिता अर्णवं किमर्थम् आदिष्टवान् ?

४. विरुद्धार्थकशब्दान् मञ्जूषातः अन्विष्य लिखत ।

सत्यम्, अन्तिमः, अनित्यः, लघुः, सूक्ष्मः,
(आद्यः, गुरुः, नित्यः, असत्यम्, स्थूलः)

५. उचितं पर्यायं चित्वा लिखत ।

अ) एतद् विश्वं _____ निर्मितम् । (तण्डुलैः/अणुभिः)

आ) _____ द्रव्यस्य मूलकारणम् । (परमाणुः/विज्ञानं)

इ) रजसः _____ भागः परमाणुः । (षष्ठतमः/शततमः)

६. जालरेखाचित्रं पूर्यत

